राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण नीति, 2023

सन्दर्भ:

- हाल ही में केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण नीति, 2023 को मंजूरी दी है।

मुख्य विशेषताएं:

- भारत में चिकित्सा उपकरण क्षेत्र के बाजार का आकार 2020 में लगभग 90,000 करोड़ रुपये होने का अनुमान है और वैश्विक चिकित्सा उपकरण बाजार में इसकी हिस्सेदारी 1.5 प्रतिशत होने का अनुमान है।
- इस नीति से अगले पांच वर्षों में चिकित्सा उपकरण क्षेत्र को वर्तमान 11 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 50 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने में मदद मिलने की उम्मीद है।

नीति की कुछ मुख्य विशेषताएं:

- इस नीति का उद्देश्य अनुसंधान और व्यवसाय को आसान बनाना और नवाचार के साथ रोगी सुरक्षा को संतुलित करना है।
- यह AERB, MeitY और DAHD जैसे हितधारकों को एक साथ लाकर चिकित्सा उपकरणों के लाइसेंस के लिए सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम तैयार करेगा।
- इसके तहत बेहतर लॉजिस्टिक्स कनेक्टिविटी के साथ आर्थिक क्षेत्रों के पास मेडिकल डिवाइस पार्क और क्लस्टर स्थापित किए जाएंगे।
- यह चिकित्सा उपकरण उद्योग के साथ बेहतर अभिसरण और एकीकरण में मदद करेगा।
- यह नीति भारत में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देती है जिसका उद्देश्य स्टार्ट-अप के लिए उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करना और समर्थन करना है।
- इसमें निजी निवेश, उद्यम पूंजीपतियों से वित्त पोषण और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) को प्रोत्साहित किया जाता है।
- यह नीति मेक इन इंडिया, आयुष्मान भारत, हील-इन-इंडिया और स्टार्ट-अप मिशन जैसी मौजूदा योजनाओं की पूरक है।
- इस नीति का उद्देश्य चिकित्सा उपकरण मूल्य श्रृंखला में कुशल पेशेवरों की स्थिर आपूर्ति करना है।
- इसे हासिल करने के लिए कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय को स्किलिंग, रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के लिए इस्तेमाल किया जाना है।
- मौजूदा संस्थानों में चिकित्सा उपकरणों के लिए समर्पित पाठ्यक्रमों का समर्थन किया जाएगा।
- वैश्विक प्रगति के साथ विदेशी अकादमिक और उद्योग संगठनों के साथ साझेदारी विकसित की जाएगी।
- बाजार पहुंच के मुद्दों से निपटने के लिए क्षेत्र के लिए एक निर्यात संवर्धन परिषद बनाई जाएगी। सर्वोत्तम वैश्विक प्रथाओं का भारत में अध्ययन और अनुकूलन किया जाएगा।

सरोगेसी के लिए ट्रिपल टेस्ट

सन्दर्भ:

- कर्नाटक उच्च न्यायालय ने सरोगेसी (विनियमन) अधिनियम, 2021 के तहत सरोगेट बच्चा पैदा करने में कानूनी बाधाओं का सामना कर रहे एक जोड़े की सहायता के लिए "ट्रिपल टेस्ट" बनाया है।

मुख्य विशेषताएं:

- यह अधिनियम केवल निस्वार्थ सरोगेसी की अनुमति देता है और वाणिज्यिक सरोगेसी को प्रतिबंधित करता है।
- तीन परीक्षणों में शामिल हैं-
  - यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चा किसी विकार के साथ पैदा नहीं हुआ, पति के लिए एक अनुवांशिक परीक्षण।
  - बच्चे की देखभाल करने की उनकी क्षमता का आकलन करने के लिए दंपति के लिए एक शारीरिक परीक्षण।
  - यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे बच्चे के भविष्य के लिए प्रदान कर सकते हैं, दंपति का आर्थिक परीक्षण।
- निस्वार्थ सरोगेसी एक ऐसे सरोगेसी व्यवस्था है जहां एक महिला किसी अन्य व्यक्ति या जोड़े के लिए बिना किसी वित्तीय या भौतिक मुआवजे के बच्चे को जन्म देकर उन्हें देने के लिए सहमत होती है।
- परोपकारी सरोगेसी में सरोगेट माँ का आमतौर पर इच्छित माता-पिता के साथ व्यक्तिगत संबंध या जुड़ाव होता है, जैसे कि परिवार का कोई सदस्य या मित्र।

सरोगेसी और आईवीएफ:

- सरोगेसी और आईवीएफ (इन विट्रो फर्टिलाइजेशन) बांझपन उपचार में उपयोग की जाने वाली दो अलग-अलग चिकित्सा प्रक्रियाएं हैं।
- आईवीएफ में एक महिला के अंडाशय से अंडे निकालना और उन्हें प्रयोगशाला में शुक्राणु के साथ निषेचित करना शामिल है।
- परिणामी भ्रूणों को गर्भावस्था के लिए महिला के गर्भाशय में वापस स्थानांतरित कर दिया जाता है।
- वहीं सरोगेसी में सरोगेट माँ का उपयोग किसी ऐसे व्यक्ति या दंपत्ति के लिए बच्चे को जन्म देने के लिए किया जाता है, जो स्वयं बच्चा पैदा नहीं कर सकते।
- आईवीएफ के माध्यम से या इच्छित पिता या दाता के शुक्राणु का उपयोग करके कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से कोई माता-पिता बन सकता है।
- आईवीएफ व्यक्तियों या जोड़ों को गर्भ धारण करने और बच्चे को जन्म देने में मदद करके बांझपन का इलाज करने की एक विधि है, जबकि सरोगेसी एक बच्चा पैदा करने की वह विधि है जब माता-पिता स्वयं गर्भधारण नहीं कर सकते हैं।

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ)

सन्दर्भ:

- हाल ही में भारत ने शंघाई सहयोग संगठन इंटरबैंक कंसोर्टियम (SCO IBC) के सदस्यों सहयोग बढ़ाने की अपील की।

मुख्य विशेषताएं:

- इंडिया इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी लिमिटेड (IIFCL) ने 26 अक्टूबर, 2022 से SCO IBC की एक वर्ष की अध्यक्षता ग्रहण की।
- SCO IBC शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य देशों द्वारा स्थापित एक बहुपक्षीय वित्तीय संगठन है।
- 16 सितंबर, 2022 को भारत ने शंघाई सहयोग संगठन की रोटेशन के आधार पर अध्यक्षता संभाली।

शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ)

- यह एक यूरेशियन राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य संगठन है।
- यह 1996 से पहले चीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान के द्वारा गठित शंघाई फाइव नाम से था।
- 2001 में इसका नाम बदलकर एससीओ कर दिया गया।
- एससीओ 19 सितंबर 2003 को लागू हुआ।
- SCO में वैश्विक जनसंख्या के 40 प्रतिशत लोग शामिल है।
- एससीओ की आधिकारिक भाषा रूसी और चीनी हैं।

लक्ष्य :

- सुरक्षा संबंधी चिंताएं।
- सीमा मुद्दों को हल करना।
- खुफिया जानकारी साझा करना।
- आतंकवाद का मुकाबला करना।
- मध्य एशिया में अमेरिकी प्रभाव का मुकाबला करना।

सदस्य :

- चीन, भारत, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, रूस, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उजबेकिस्तान।
- भारत और पाकिस्तान दोनों 2017 में एससीओ के पूर्ण सदस्य बने।
- इसके चार पर्यवेक्षक राज्य- अफगानिस्तान, बेलारूस, ईरान और मंगोलिया है।
- इसके संवाद सहयोगी- अर्मेनिया, अज़रबैजान, कंबोडिया, नेपाल, श्रीलंका और तुर्की है।

क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी संरचना (आरएटीएस):

- ताशकंद, उज्बेकिस्तान में आयोजित एससीओ शिखर सम्मेलन में क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी संरचना (आरएटीएस) की स्थापना की गई थी।
- आरएटीएस के माध्यम से, एससीओ सदस्य महत्वपूर्ण खुफिया जानकारी, जानकारी, कानूनी विशेषज्ञता साझा करते हैं और साथ ही आतंकवादियों के प्रत्यर्पण की अनुमति देते हैं।

- सैन्य सहयोग।

लाल कान वाला स्लाइडर कछुआ

सन्दर्भ:

- हाल ही में मैक्सिकन जायंट कछुआ (जिसे लाल कान वाले स्लाइडर के रूप में भी जाना जाता है) पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले में पाया गया।

मुख्य विशेषताएं:

- बंगाल क्षेत्र में इसकी उपस्थिति ने विशेषज्ञों को हैरान कर दिया है।
- बंगाल में यह पहली बार 2015 में राजारहाट जलाशय में देखा गया था। दूसरी बार पांच साल बाद 2020 में रवींद्र सरोवर में देखा गया था।
- यह तीसरी बार है जब लाल कान वाला स्लाइडर पश्चिम बंगाल में दिखाई दिया है।
- यह कछुआ भारत में सबसे पहले केरल की कोलथोड नहर में देखा गया था, जहाँ केरल वन अनुसंधान संस्थान ने इसकी देखभाल की।

रेड-ईयर स्लाइडर कछुए के बारे में:

- इसका वैज्ञानिक नाम 'ट्रेकेमिस स्क्रिप्ट एलिगेंस' है।
- यह मैक्सिको, दक्षिण अमेरिका और मिसीसिपी नदी का मूल निवासी है।
- यह जीवंत और मनोरम सुनहरे रंग के साथ, लाल कान वाला स्लाइडर दक्षिण अमेरिका में एक लोकप्रिय पालतू जीव है।
- यह अपने कानों के पास चमकीले लाल गोलाकार या आयताकार धब्बों के लिए जाना जाता है।
- वे तालाबों, छोटे जल निकायों और मीठे पानी की झीलों में निवास करते हैं और ये किसी भी वातावरण को जल्दी से अपना सकते हैं।
- मछली और अन्य जलीय जंतु इन कछुओं के निवास वाले क्षेत्रों में जीवित रहने के लिए संघर्ष करते हैं।
- साल्मोनेला बैक्टीरिया की वाहक, यह प्रजाति जलीय जंतुओं और मनुष्यों दोनों के लिए खतरा है।
- साल्मोनेला संक्रमण से दस्त, पेट में दर्द, उल्टी और बुखार हो सकता है। संभावित विनाशकारी परिणामों के साथ दीर्घकालिक प्रभाव मानव शरीर में चयापचय कोशिका क्षति का कारण बन सकते हैं।
- सुरक्षा की स्थिति :
- आईयूसीएन लाल सूची: Least Concern

संक्षिप्तसुर्खियां

कोणार्क सूर्य मंदिर

सन्दर्भ:

- हाल ही में कोणार्क में सूर्य मंदिर के अंदर काम करने के लिए फोटोग्राफरों को लाइसेंस जारी करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा अपनाई

गई मैट्रिक की न्यूनतम पात्रता मानदंड को चुनौती देते हुए उड़ीसा उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की गई है।

सूर्य मंदिर के बारे में:

- इसे 13वीं शताब्दी में बनाया गया था।
- इसे गंग वंश के महान शासक राजा नरसिंहदेव प्रथम ने बनवाया था।
- सूर्य मंदिर की कल्पना सूर्य भगवान के विशाल रथ के रूप में की गई थी, जिसमें 12 पहियों की दो पंक्तियाँ (24 पहिए) अति सुंदर अलंकृत पहिए थे जिन्हें सात घोड़े खींचते थे।
- मंदिर के पहिये धूपघड़ी हैं, जिनका उपयोग एक मिनट तक समय की सटीक गणना करने के लिए किया जा सकता है।
- इस मंदिर को 1984 में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल में शामिल किया गया था।
- यह कलिंग वास्तुकला, विरासत, समुद्र तट और प्रमुख प्राकृतिक सुंदरता का एक आदर्श मिश्रण है।
- यह प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्व स्थल और अवशेष (AMASR) अधिनियम (1958) के नियम (1959) द्वारा भारत के राष्ट्रीय ढांचे के तहत संरक्षित है।
- इस मंदिर को इसके गहरे रंग के कारण 'ब्लैक पैगोडा' के नाम से भी जाना जाता था
- इसका उपयोग प्राचीन नाविकों द्वारा ओडिशा जाने के लिए एक नेविगेशनल लैंडमार्क के रूप में किया जाता था।
- पुरी में जगन्नाथ मंदिर को "व्हाइट पैगोडा" कहा जाता था।

विश्व विकास रिपोर्ट

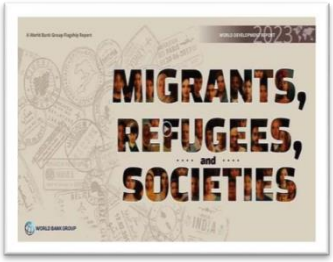

सन्दर्भ:

- विश्व बैंक की नवीनतम विश्व विकास रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीयों के लिए विदेश जाना अधिक सक्षम है।

भारत के बारे में रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं:

- रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय श्रमिकों की भारत के बाहर आय में 120% की वृद्धि, जबकि भारत के भीतर आंतरिक प्रवासन व्यक्तिगत आय में केवल 40% की वृद्धि देखी गई है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका में एक कम कुशल भारतीय कर्मचारी की आय में 500 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।
- इसके बाद संयुक्त अरब अमीरात कम कुशल श्रमिकों के लिए अगला पसंदीदा गंतव्य है, जहाँ भारत की तुलना में 300 प्रतिशत अधिक वृद्धि देखने की मिली है।

	• रिपोर्ट में "मैच-मोटिव फ्रेमवर्क" का उपयोग करते हुए माइग्रेशन ट्रेड-ऑफ पर चर्चा की गई है।
	  ○ प्रवासन से अधिकांश लोगों के वेतन में भारी वृद्धि होती है, जिनके कौशल और विशेषताएँ गंतव्य समाज की आवश्यकताओं के साथ एक मजबूत मेल हैं।
	• 2022 में 100 अरब डॉलर का आंकड़ा पार करने के बाद, विश्व में भारत प्रेषण का सबसे बड़ा लाभार्थी है।
	• रिपोर्ट के बारे में:
	  ○ यह इंटरनेशनल बैंक फॉर रिकंस्ट्रक्शन एंड डेवलपमेंट या वर्ल्ड बैंक द्वारा 1978 से प्रकाशित एक वार्षिक रिपोर्ट है।
	  ○ प्रत्येक WDR आर्थिक विकास के एक विशिष्ट पहलू का गहन विश्लेषण प्रदान करता है।

शहर सौंदर्य प्रतियोगिता 	**सन्दर्भ:** • हाल ही में आवास और शहरी मंत्रालय द्वारा लॉन्च किया गया 'सिटी ब्यूटी कॉम्पिटिशन' पोर्टल लाइव कर दिया गया है। **मुख्य विशेषताएं:** • इस प्रतियोगिता का उद्देश्य सुंदर, अभिनव और समावेशी सार्वजनिक स्थान बनाने के लिए देश भर के शहरों और वार्डों द्वारा किए गए परिवर्तनकारी प्रयासों को प्रोत्साहित करना और पहचानना है। • इस प्रतियोगिता के तहत, शहरों में वार्डों और सार्वजनिक स्थानों को पांच व्यापक स्तंभों जैसे- पहुंच, सुविधाएं, गतिविधियां, सौंदर्य और पारिस्थितिकी के तहत आंकलन किया गया। • यह प्रतियोगिता शहरों में सबसे सुंदर वार्डों और सार्वजनिक स्थलों को सम्मानित करेगी। • शहरी सौंदर्य प्रतियोगिता वार्डों और शहरों को सुंदर सार्वजनिक स्थान बनाने की दिशा में अपने हस्तक्षेप को प्रदर्शित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है।
क्वासर (Quasars)	**सन्दर्भ:** • हाल ही में एक अध्ययन से पता चला है कि आकाशगंगाओं के विलय से क्वासर प्रज्वलित होते हैं।

मुख्य विशेषताएं:

- क्वासर अत्यंत चमकदार, दूरस्थ खगोलीय पिंड हैं जो भारी मात्रा में ऊर्जा और प्रकाश उत्सर्जित करते हैं।
- इन्हें सक्रिय गांगेय नाभिक माना जाता है जो आकाशगंगाओं के केंद्रों में मौजूद होते हैं तथा सुपरमैसिव ब्लैक होल द्वारा संचालित होते हैं।
- क्वासर रेडियो तरंगों, अवरक्त विकिरण, दृश्य प्रकाश, पराबैंगनी विकिरण, एक्स-रे और गामा किरणों सहित विद्युत चुम्बकीय विकिरण की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्सर्जन करते हैं।
- उन्हें पहली बार 1960 के दशक में पहचाना गया था और ब्रह्मांड के विकास और संरचना को समझने के लिए खगोलविदों द्वारा बड़े पैमाने पर अध्ययन किया गया है।
- क्वासर की विकीर्ण ऊर्जा अत्यधिक होती है; सबसे शक्तिशाली क्वासरों में मिल्की वे जैसी आकाशगंगा की तुलना में हजारों गुना अधिक चमक होती है।

91 एफएम ट्रांसमीटर

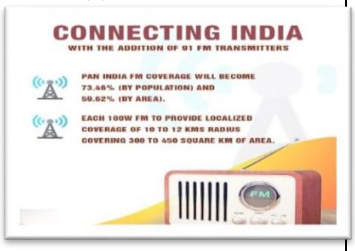

सन्दर्भ:

- हाल ही में प्रधानमंत्री ने देश में रेडियो कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए 91 एफएम ट्रांसमीटरों का उद्घाटन किया।

मुख्य विशेषताएं:

- ये ट्रांसमीटर 18 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों के 84 जिलों में स्थापित किए गए हैं।
- इस विस्तार का विशेष ध्यान आकांक्षी जिलों और सीमावर्ती क्षेत्रों में कवरेज बढ़ाने पर रहा है।
- इस विस्तार के साथ अतिरिक्त दो करोड़ लोगों और लगभग 35 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में अब आकाशवाणी की एफएम सेवा तक पहुंच होगी।

क्षुद्रग्रह 3200 फेथॉन

सन्दर्भ:

- 3200 फेथॉन (एक क्षुद्रग्रह जो वार्षिक जेमिनीड उल्का बौछार का स्रोत है) जैसा कि पहले सोचा गया था वह अपने पीछे धूल के बजाय सोडियम गैस से बनी एक आकृति छोड़ते है।

मुख्य विशेषताएं:

- क्षुद्रग्रह ज्यादातर हमारे सौर मंडल के प्रारंभिक गठन के चट्टानी अवशेष हैं और जब

वे सूर्य के पास आते हैं तो आमतौर पर पूंछ नहीं बनाते हैं।

- इसके विपरीत धूमकेतु बर्फ और चट्टान से बने होते हैं और वे पूंछ बनाते हैं क्योंकि सूर्य उनकी बर्फ को वाष्पित करता है, उनकी सतहों से सामग्री को नष्ट कर देता है और उनकी कक्षाओं के साथ एक निशान छोड़ देता है।
- हालांकि, यह अजीबोगरीब क्षुद्रग्रह 3200 फेथॉन धूमकेतु की तरह ही काम करता है जो सूर्य के निकट आने पर चमकता और पूंछ बनाता है।
- अब तक वैज्ञानिकों ने इस घटना को सूर्य के करीब आने के दौरान क्षुद्रग्रह 3200 फेथॉन से धूल के निकलने के कारण जिम्मेदार ठहराया है।
- लेकिन नासा की दो सौर वेधशालाओं का उपयोग करते हुए नवीनतम अध्ययन से पता चला है कि फेथॉन की पूंछ धूल से नहीं बनी है, बल्कि मुख्य रूप से सोडियम गैस से बनी है।
- सूर्य के साथ क्षुद्रग्रह फेथॉन के साथ मिलान ने क्षुद्रग्रह के भीतर सोडियम के वाष्पीकरण और धूमकेतु जैसी गतिविधि को प्रेरित किया।

अजेय वॉरियर 2023

सन्दर्भ:

- भारत और यूनाइटेड किंगडम (यूके) की सैन्य टुकड़ियों ने समग्र सैन्य संबंधों को मजबूत करने के प्रयासों के तहत यूके के सैलिसबरी मैदानों में दो सप्ताह के संयुक्त सैन्य अभ्यास 'अजेय वॉरियर 2023' के सातवें संस्करण की शुरुआत की।

मुख्य विशेषताएं:

- अजेय वारियर यूके के साथ एक द्विवार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो दोनों देशों में वैकल्पिक रूप से आयोजित किया जाता है।
- पिछला संस्करण अक्टूबर 2021 में चौबटिया, उत्तराखंड में आयोजित किया गया था।
- इस अभ्यास के दौरान दोनों सेनाएं विभिन्न स्थितियों में अपने परिचालन कौशल का परीक्षण करने और सामरिक अभ्यासों को परिष्कृत करने वाली विभिन्न गतिविधियों में शामिल होंगी जो दोनों सेनाओं के बीच अंतर-संचालन क्षमता विकसित करने में मदद करेंगी।

MCQ, Current Affairs, Daily Pre Pare